ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 18 कुल पृष्ठ-8 31 दिसम्बर, 2020 से 6 जनवरी, 2021 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 मा. शु.-01

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में आयोजित समारोह में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आह्वान

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की उन्नति हेतु तन-मन-धन से दें सहयोग

महान स्वतंत्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान से देशवासी लें प्रेरणा

24 दिसम्बर, 2020 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के तत्वावधान में एक विशेष आयोजन के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। गुरुकुल विद्यालय परिसर में आयोजित प्रातःकालीन यज्ञ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. दीनानाथ शर्मा मुख्याधिष्ठाता एवं कनसंर्ड अथारिटी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, डॉ. नवनीत परमार सहायक मुख्याधिष्ठाता, डॉ. बिजेन्द्र शास्त्री प्रधानाचार्य, डॉ. योगेश शास्त्री यज्ञ ब्रह्म, आचार्य अखिलेश योगी आदि की उपस्थिति में गुरुकुल के समस्त अध्यापकों, कर्मचारियों एवं ब्रह्मचारियों आदि ने यज्ञ में आहुति दी।

यज्ञ के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कुल पताका का आरोहण किया। इस अवसर पर अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को संकल्प बनाकर कार्य करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की विरासत के रूप में चल रही समस्त संस्थाओं को आगे बढ़ाना एवं उसकी प्रतिष्ठा को चार चांद लगाना हम सभी का दायित्व है। उन्होंने समस्त कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों से आग्रह किया कि वे समर्पित भाव से इन संस्थाओं की सेवा करें।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सर्वस्व समर्पित करके राष्ट्र को जो दिशा दी है। आज पुनः उस पर चलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का शुभारम्भ करके एक ऐतिहासिक कार्य किया था। गुरुकुलीय शिक्षा, धर्म जागृति, समाजसेवा आदि अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन करके उन्होंने भारतवर्ष को एक नया रास्ता दिखाया। श्रद्धा तथा संकल्पशक्ति के बल से ही वे यह सब कर सके। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन करने की ठानी और गुरुकुलीय शिक्षा को पुनः प्रचलित करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने जो गुरुकुल स्थापित किया वह देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी चर्चा का विषय बना। इस गुरुकुल में देश के प्रतिष्ठा प्राप्त राजनेता, बड़े-बड़े अधिकारी तथा धनी-मानी व्यक्ति गुरुकुल के दर्शन के लिए पधारते रहे हैं।

स्वामी जी ने कहा कि धार्मिकता, सेवा, ज्ञानोपासना और तप यही जीवन का सर्वस्व है और इन जीवन तत्त्वों का पोषण केवल गुरुकुल शिक्षा के प्रचार से ही हो सकता है। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की घटनाओं का भावपूर्ण वर्णन करते हुए लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि यदि हम सच्चे अर्थों में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान, योगदान व विशेषताओं को जीवित रखना चाहते हैं, उनके प्रेरक जीवन से वर्तमान व आने वाली पीढ़ियों को सुधारना चाहते हैं तो उनके मन्तव्यों, कार्यों व आदर्शों को व्यवहारिक रूप देना होगा। स्वामी जी ने कहा कि आज देश में गुरुकुलीय शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। अपने बच्चों को संस्कारित करना, उनको देश प्रेम, माता-पिता की सेवा, सच्चाई, ईमानदारी तथा अन्य मानवीय गुणों से युक्त करना है तो गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा देना होगा। स्वामी जी ने श्रोताओं का आह्वान किया कि गुरुकुलीय शिक्षा की उन्नति के लिए तन-मन-धन से सहयोग करें।

श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता कर रहे मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेद में मैं एवं मेरी मातृभूमि

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

वेद में भूमि को माता एवं मानव को उसका पुत्र कहा गया है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्यां' अथर्ववेद की यह उक्ति सुप्रसिद्ध है। वहां पर भूमि एवं पृथिवी दो पद हैं। भूमि मेरी माता है। इसका सम्बन्ध जन्म से है। माता भी जन्म देती है। पृथिवी के जिस भाग में जन्म हुआ है, वह मेरी मातृ तुल्य है। भवन्ति अस्याम् इति भूमिः। जहां मेरा जन्म हुआ है, वह मेरी मातृभूमि है। किन्तु मैं केवल इसी छोटे से स्थान का पुत्र नहीं हूँ अपितु पृथिवी, इस समस्त पृथिवी का पुत्र मैं हूँ। पृथिवी का सम्बन्ध विस्तार से है। 'प्रथनात् पृथिवी' अर्थात् जहां तक भी वह फैली हुई है वहीं तक समस्त पृथिवी का मैं पुत्र हूँ। इसमें देश, प्रान्त, नगर आदि की सीमाएं नहीं हैं। समस्त पृथिवी (भूगोल) एक है। यह तो हम ने अपने स्वार्थवश इस विशाल पृथिवी का विभाजन कर डाला। इसको नगर, प्रान्त देश आदि की सीमाओं में बांध डाला। पृथिवी तो अपने स्वरूप में उसी प्रकार एक है जैसे कि आकाश। किन्तु हम ने तो पृथिवी की भांति आकाश में भी अपनी अपनी सीमांए निश्चित की हुई हैं। बिना आज्ञा के किसी भी देश की सीमा में प्रवेश अतिक्रमण माना जाता है किन्तु वह सब मानवकृत विभाग है। वेद के अनुसार तो हम समस्त पृथिवी के ही पुत्र हैं। वहां पर देश आदि की सीमाएं नहीं हैं।

मैं इस समस्त पृथिवी का पुत्र हूँ। मेरे दो कर्त्तव्य हैं – पहला यह कि मैं इस पृथिवी के पृथिवीत्व में वृद्धि करूं। इसका विस्तार करूं, जंगलों तथा ऊसर भूमि के रूप में अभी तक जो भूमि ऐसी पड़ी है जहां न तो निवास किया जा सकता है, न कृषि आदि। पुत्र होने के नाते मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उस भूमि को निवास योग्य बनाऊ। वही भूमि का विस्तार है। अब तक उसका नाम पृथिवी नहीं अपितु जंगल आदि के रूप में था। पुत्र के रूप में मेरा दूसरा कर्त्तव्य इस समस्त पृथिवी की, इस पर बसे मानवों की सेवा करना हैं। माता–पिता का नरक अथवा दुःख से त्राण करने के कारण ही पुत्र को पुत्र कहा जाता है। यदि मैं भी इस पृथिवी का पुत्र हूं तो मेरा भी कर्त्तव्य है कि मैं भी इस पर बसने वाले प्राणियों के कष्ट को दूर करके उन्हें सुख प्रदान करूं।

मातृभूमि के शत्रु :–

कुछ ऐसे भी उपद्रवी तत्व होते हैं जो इस पृथ्वी की शांति को भंग करते ही रहते हैं हत्या लूटपाट, आक्रमण करना ही उनका उद्देश्य रहता है। इस प्रकार के कार्यों में व्यक्तिगत स्तर पर दुष्ट मानव, उनके विभिन्न संगठन तथा शेष देश भी सम्मिलित रहते हैं। ऐसे शत्रुओं को वेद में चार रूपों में विभक्त किया गया है –

(1) यो नो द्वेषत –

जो केवल मन से द्वेश करते रहते हैं। अपने देश की सीमाओं में बंद होकर दूसरे देश की उन्नति को सहन नहीं कर सकते हैं येन–केन–प्रकारेण उसके मार्ग में बाधाएं खड़ी करते रहते हैं। ऐसे देश अथवा संगठन दूसरे देश के ऊपर साक्षात आक्रमण नहीं करते अपित परोक्ष रूप में ही उसके उन्नति में बाधा उपस्थित करते रहते हैं। चीन वही तो कर रहा है भारत पर सीधा आक्रमण ना करके भी वह निरंतर इस के मार्ग में बाधा उपस्थित करता रहता है। अन्य देश भी इस कार्य में उसके सहयोगी हैं। दूसरे देश से नहीं अपने भारत के अंदर निवास करने वाले भी अनेक ऐसे व्यक्ति तथा संगठन हैं जो भारत की उन्नति को सहन नहीं करते तथा मन ही मन इसके साथ द्वेश एवं ईर्ष्या रखते हैं ऐसे संगठन विविध जाति एवं धर्म के रूप में अथवा स्वतंत्र भी होते हैं।

(2) यः पृतन्यात् :

जो साक्षात सेना लेकर आक्रमण करते हैं वे तो मेरी मातृभूमि के साक्षात शत्रु है ही। भारत पर पहले भी इस प्रकार के विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। मुसलमानों के अनगिनत आक्रमण इसके प्रमाण हैं भारत की संस्कृति को नष्ट करते रहे यहां की संपदा को लूटते रहे तथा यहां अपने साम्राज्य का विस्तार करते रहे आज भी वह प्रवृत्ति जारी है 1962 ईस्वी का चीनी आक्रमण तथा 1947 एवं 1965 के पाकिस्तानी आक्रमण इसके प्रमाण हैं आज भी पाकिस्तान आक्रमण की तैयारी में रहता ही है। अपनी शक्ति बढ़ा रहा है। चीन आदि देश भी उसके साथ रहते हैं देश के अंदर भी इस प्रकार के आक्रमण होते रहते हैं एक संगठन अपने विद्रोही समाज के संगठन पर आक्रमण करता रहता है।

(3) योऽभिदासान् मनसा :

कुछ देश दूसरे देश पर सीधा आक्रमण न करके मानसिक रूप में उस देश को वहां के निवासियों को अपना दास बना लेना चाहते हैं। यह उन आक्रमणकारियों की अपेक्षा अधिक खतरनाक होते हैं जो कि सेना के द्वारा सीधा आक्रमण करते हैं। ऐसे आक्रमण के विरुद्ध तो समूचा देश एक हो उठता है। उसका प्रतिरोध आपसी भेदभाव भुलाकर भी किया जाता है। पाकिस्तानी तथा चीनी आक्रमण के समय ऐसा ही किया था किंतु जो देश मानसिक रूप से हमें गुलाम बनाना चाहता है उसका प्रतिरोध दुष्कर होता है क्योंकि सामान्य जनता उसकी चाल नहीं समझती है। ऐसे देश दूसरे देश की शिक्षा सभ्यता साहित्य एवं संस्कृति पर कुठाराघात किया करते वहां के धर्म को नष्ट किया करते हैं और किसी प्रकार का आक्रमण सेना आदि के द्वारा नहीं करते हैं। किन्तु नीचे ही नीचे किसी देश की सभ्यता संस्कृति एवं धर्म को नष्ट करके उसकी जड़ों को खोखला कर देते हैं। अंग्रेजों ने यही किया था। वह कहावत ठीक ही है कि यदि किसी देश को नष्ट करना हो तो उसके साहित्य एवं संस्कृति को नष्ट कर दो। अंग्रेज इस कार्य में सफल हुए। वह मुसलमानों की भांति आक्रांता के रूप में यहां नहीं आए थे वह व्यापारी की भांति आए थे। किंतु यहां अपने पैर जमाते ही अपना साम्राज्य स्थापित होते ही उन्होंने यहां की शिक्षा सभ्यता संस्कृति एवं साहित्य पर कुठाराघात किया। इनके स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा, साहित्य, सभ्यता एवं संस्कृति का विस्तार किया, उनका प्रयास सफल रहा। परिणाम स्वरूप अंग्रेजी राज्य की समाप्ति के 70 वर्ष पश्चात भी हम मानसिक रूप से अभी भी उनकी गुलामी को आज तक ढो रहे हैं तथा पता नहीं कब तक ढोते रहेंगे। ऐसे यत्न तो अभी तक समाप्त नहीं हुए हैं। अपितु अहर्निश हो रहे हैं। विदेशी पादरियों के रूप में एक सुसम्बद्ध एवं सशक्त रूप में यही कार्य अभी भी किया जा रहा है। उनको भरपूर विदेशी आर्थिक सहायता दी जा रही है यह सब कुछ भारतीयों को मन से दास बना लेने का ही तो यत्न है। दूरद्रष्टा वीर सावरकर का कहना धर्मांतरण यानि राष्ट्रान्तरण गलत नहीं था। नागालैंड आदि इसके प्रमाण हैं।

(4) यो बधेन :

कुछ संगठन तथा देश दूसरे देश पर ना अधिकार करते हैं ना उनको मन से दास बनाने का यत्न करते हैं किंतु नरसंहार करके अपनी प्रवृत्ति का प्रदर्शन ही करते हैं। पुराने जमाने के विदेशी आक्रांताओं में अनेक ऐसे थे जिनके द्वारा निरपराध जनता के कत्लेआम के साक्षी आज भी इतिहास की यह पुस्तकें दे रही हैं जो स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं। तैमूर लंग, नादिरशाह, चंगेज खां आदि आक्रांता इसके उदाहरण हैं आज भी कश्मीर तथा यथाशक्ति अन्य स्थानों पर भी आतंकवादी वही तो कर रहे हैं।

ऐसे समस्त शत्रुओं के प्रति हम क्या व्यवहार करें, वेद कहता है तूं नो भूमें रन्धय। हे मातृभूमि! इस प्रकार के समस्त शत्रुओं को उसी प्रकार रांध दे जैसे कि पतीली में सब्जी को अग्नि से रांध दिया जाता है। पृथ्वीराज चौहान की भांति 16 बार मोहम्मद गौरी जैसे शत्रु को परास्त करके छोड़ दिए जाने की गलती वेदज्ञ राजा नहीं करेगा। कैसी जहालत थी कि शत्रु बार–बार विदेश से आकर तुम पर आक्रमण कर रहा है तथा तुम बार–बार उसे अपनी वीरता के दर्प में छोड़ देते हो जबकि वह एक बार सफल होकर तुम्हें बन्दी बनाकर गजनी ले जाकर आंखें निकलवा देता है। यदि तुमने सफल होकर उसे एक बार में ही रौंद दिया होता तो भारत को वह दुर्भाग्य न देखना पड़ता।

हमारा कर्तव्य है कि हम इस प्रकार के सभी शत्रुओं को पहचान कर उनके मूलानाश का यत्न करें। पूरा मन्त्र इस प्रकार है –

यो नो द्वेषत् पृथिवी यः पृतन्याद् योऽभिदासान्।
मनसा यो बधेन तं नो भूमे रन्धय पूर्व कृत्वरि।।

(अथर्ववेद 12/1/14)

वेद इस प्रकार के सभी मनुष्यों को कठोर दंड की आज्ञा देता है। जो भी उग्रवाद या आतंकवाद का आश्रय लेकर निर्दोष प्राणियों का वध करते हैं या कत्लेआम जैसे दुष्कृत्य करते हैं, वेद उनके विषय में कहता है – 'अनागो हत्या वै भीमा।' निरपराध का वध करना बहुत भयंकर कार्य है। ऐसे निंदनीय कार्य करने वालों को जीवित नहीं छोड़ना चाहिए। कठोर दंड या उनका समूल नाश ही एकमात्र उपाय है। मनु ने भी ऐसे व्यक्तियों के लिए ही कहा है – आततायिनम् आयान्त

अगले पृष्ठ पर जारी है

आओ मांगे इन्द्र से

– वेदरत्न डॉ. सत्यव्रत राजेश

वेद की एक सूक्ति है – पुलुकामो हि मर्त्यः। मनुष्य बहुत इच्छा वाला है। जब से व्यक्ति होश सम्भालता है तभी से कामनाओं का जाल बुनने लगता है। बालक को मां की गोद और मां के आंचल की इच्छा होती है। कुछ बड़ा होने पर खिलौने से खेलने की इच्छा जन्म ले लेती है। फिर गली में खेलते बच्चों को देखकर खेलने की इच्छा जग जाती है। इसी प्रकार पढ़ने–लिखने की इच्छा, व्यवसाय या नौकरी की इच्छा, फिर विवाह की इच्छा, फिर सन्तानों की इच्छा उन्हें पाल पोस कर काम पर लगाने की इच्छा, इन्हीं में जीवन बीत जाता है, परन्तु इच्छाओं का अन्त नहीं होता। भर्तृहरि ठीक ही लिखते हैं –

बलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरङ्कितं शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैता तरुणायते।।

अर्थात् झुर्रियों से मुंह भर गया है, सिर के बाल श्वेत हो गये हैं, शरीर के अंग शिथिल हो गये हैं किन्तु एक तृष्णा है जो जवान होती जाती है। यह जीवन की वास्तविकता है, तथ्य है, सच्चाई है। प्रभु हमारे अन्तःकरण को जानते हैं। अतः मानव गलत इच्छा न करे, इसके लिए वे एक मन्त्र में परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं –

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्ति दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणाकरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाच सुनित्वमहम्।।

हे ऐश्वर्यों के भण्डार प्रभो! हमें श्रेष्ठ धन, शक्ति के सदुपयोग का ज्ञान, सौभाग्य, धन की पुष्टि, शरीर की आरोग्यता, वाणी की मधुरता तथा दिनों का सुदिनत्व प्रदान करो।

मन्त्र में निम्नलिखित वस्तुएं मांगी हैं।

1. श्रेष्ठ धन। मानव जीवन के लिए धन आवश्यक है। बिना धन के शरीर निर्वाह कठिन होता है। धनहीन व्यक्ति हीन माना जाता है। गृहस्थ तो धन के बिना पंगु है। आज तो धन की दोड़ में व्यक्ति आंख मींच कर दौड़ रहा है तथा वह धन कैसा है, इसकी ओर उसका ध्यान ही नहीं है। किन्तु वेद लोकोन्नति के सिाथ परलोकोन्नति को भी आवश्यक मानता है। अतः धन ऐसा हो जो परलोक न बिगाड़े। पापवृत्ति से कमाया गया धन मन की शान्ति को छीन लेता है। अतः वेद ने श्रेष्ठ धन, धर्मपूर्वक कमाए धन को मांगा है, पापाचार से अर्जित धन को वहीं।

2. दूसरा मांगा है – चित्तिंदक्षस्य बल का ज्ञान। मनुष्य के पास अनेक बल हो सकते हैं – शरीर बल, मनोबल, बुद्धिबल, आत्मबल, पदबल, राज्यबल। बल आने पर मनुष्य को अभिमान आ जाता है और वह बलों का दुरुपयोग करना प्ररम्भ कर देता है। बल तो होता है पर ज्ञान, उसके सदुपयोग का ज्ञान नहीं रहता। यह अवस्था भी मनुष्य के पतन का कारण बनती है। इसलिए शक्ति के सदुपयोग की प्रार्थना की है।

3. तीसरी वस्तु मांगी है, सुभगत्व, उत्तम अंगत्व। इसका जहां सौभाग्य अर्थ होता है वहां अन्य अर्थ भी है। संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया है –

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्च षण्णां भग इतीरते।।

अर्थात् सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, शोभा, ज्ञान और वैराग्य इन छः को भग कहते हैं। यहां भी भग के साथ लगा सु उपसर्ग उनकी उत्तमता की ओर संकेत करता है।

4. रयीणां पुष्टि – धन की पुष्टि, धन का संवर्धन। सप्तपदी के तीसरे पैर उठाने के समय कहा जाता है – रामस्पोषाय त्रिपदी भव – धन की पुष्टि के लिए तीसरा पग बढ़ा। गृहस्थ सुख के लिए जहां श्रेष्ठ धन आवश्यक है वहां उसकी वृद्धि भी आवश्यक है। घर में धन बढ़ता है तो उसके साथ ही मनोबल में भी वृद्धि होती है तथा उसका प्रभाव शरीर के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। धन के क्षीण होने पर मानसिक स्थिति भी शिथिल पड़ जाती है और व्यक्ति अपने को गौरवहीन सा अनुभव करने लगता है।

5. तनूनां अरिष्टिम् – शरीरों की आरोग्यता। जीवन के सुख के लिए शरीर का नीरोग रहना बहुत आवश्यक है। कालिदास की यह उक्ति कि – शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् – अर्थात् शरीर धर्म के साधन में प्रथम है, इसी भाव को दर्शाती है। स्वस्थ शरीर से ही व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। यह वह वाहन है जिस पर बैठक कर जीवात्मा जीवन की यात्रा करता है। अतः शरीर की आरोग्यता भी मांगने की वस्तु है।

6. वाचः स्वाद्यानम् – वाणी की मधुरता। संसार को अपना बनाने में मीठी वाणी अमोध अस्त्र है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं – तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहुं ओर, वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर।

अर्थात् मीठा बोलने से चारों ओर सुख उत्पन्न होता है। लोगों को वश में करने का एक ही मन्त्र है और वह यह है कि व्यक्ति कड़ुवा बोलना छोड़ दे। किसी कवि ने कहा है –

काका का का धन हरे कोयल का को देय।
एक वचन के कारणे जग वश में कर लेय।

कौआ भी बोलता है और कोयल भी बोलती है। न कौआ किसी का धन छीनता है और न कोयल किसी को देती है। किन्तु मीठा बोलने के कारण संसार को अपने वश में कर लेती है।

मीठा बोलने से मित्रों की संख्या बढ़ जाती है तथा कड़ुआ बोलने से शत्रुओं की। जिसके चारों ओर शत्रु हों उसे सुख कहां और जिसे चारों ओर मित्र ही मित्र मिलें उसे सुख क्यों नहीं मिलेगा। इसलिए वाणी की मधुरता जीवन में रस भरती है। वेद कहता है –

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा दामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः।।

– अथर्व

मेरा निकलना मिठास भरा हो, मेरा आना मधुरता से युक्त हो, मैं वाणी से मीठा बोलूं और शहद जैसा मीठा बन जाऊँ।

7. सातवां है अह्नां सुदित्वम् – दिनों का सुदिन बनना। प्रत्येक दिन आता है और चला जाता है। हम उसका सदुपयोग करें या दुरुपयोग, उसे तो रूकना नहीं हैं जो दिन आलस्य में गया, अनाचार, अत्याचार, पाप पाखण्ड की वृद्धि या कुविचारों में बीता वह कुदिन है। वह न केवल व्यर्थ ही गया अपितु हमारा कुछ खोकर गया तथा पुण्य कार्यों में बीता सुदिन है। क्योंकि इसे हमने अपने लोक मंगल, परोपकार करके कमाया है। यह हमारा कमाई का दिन था, व्यर्थ गया दिन नहीं था। सुदिन का एक अर्थ सुख शांति और आनन्द का दिन भी है। परमात्मा हमें सुख शांति तथा आनन्द से भरे।

ये वेद की प्रार्थनाएं, कामनाएं कितनी उत्तम है। हमारे घरों में श्रेष्ठ, नेक कमाई का, ईमानदारी से अर्जित धन हो। हम निर्धन न रहें किन्तु पापी धनी भी न बनें। हम शक्तिशाली हों, धन बल, प्रतिष्ठा बल, शरीर मन बुद्धि तथा आत्मा का बल हो, परन्तु हमें उसके सदुपयोग का, स्वहित परहित में लगाने का, अपने लोक तथा परलोक सुधारने का ज्ञान हो। हम सौभाग्यशाली कहलाएं। हमारे घरों में धन की वृद्धि होती रहे। हम शरीर से स्वस्थ रहें, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें। हमारी वाणी में माधुर्य हो जिससे हम मानवों के हृदयों में रस का संचार कर सकें तथा हम बुरे दिनों से दुख, रोग, कठिनाई और आपत्ति–विपत्तियों से बचकर शरीर मन आदि से पीड़ित न हों।

मांगने वालों, अपनी प्रार्थना में इस मन्त्र में वर्णित कामनाओं को भी स्थान दो। तुम्हारा घर मंगल से भर जायेगा।

पृष्ठ 2 का शेष

वेद में मैं एवं मेरी मातृभूमि

हन्यादेवविचारयन्' अर्थात आततायी आतंकवादी को बिना विचार किए ही मृत्यु दंड दे देना चाहिए। आज हमारे देश में कठोर दंड समाप्त हो रहा है। अपराधी न्याय प्रक्रिया को बाधित करके दंड से बचे रहते हैं। राजनीतिक स्तर पर भी उन्हें बचाने के प्रयास किए जाते हैं इसका प्रयत्क्ष उदाहरण हमारे देश में देखा जा सकता है। आज कितने ही आतंकवादी और गम्भीर अपराधों में लिप्त अराजक तत्त्व जेलों में बन्द हैं और सरकारें उनके लिए उचित दण्ड व्यवस्था का निर्णय नहीं कर पा रही हैं। इस प्रकार देश कैसे सुरक्षित रह सकता है।

एक ही आतंकवादी अनेक निर्दोष नागरिकों का नाश कर देता है। यह उन्हें कठोर दंड न मिलने के कारण ही हो रहा है। वेद राष्ट्रद्रोही आतंकवादियों तथा आक्रमणकारियों के समूल विनाश की आज्ञा देता है। तभी मेरी मातृभूमि सुरक्षित रहेगी। मेरा अपनी मातृभूमि से भावनात्मक संबंध है। उसका अन्न पानी खाकर उसके पदार्थों का उपयोग करके मेरा पालन–पोषण हुआ है। मेरी मातृभूमि ने मेरी माता के समान ही मेरा संवर्धन एवं पालन किया है। वेद कहता है – '' सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय में पयः'' जिस प्रकार माता पुत्र को अपना दुग्धपान कराती है, उसी प्रकार मेरी मातृभूमि ने मेरे लिए विविध पदार्थ प्रदान किए हैं। अतः मेरा भी कर्तव्य बनता है कि मैं भी अपनी माता के समान ही मातृभूमि की सेवा करूं। इसीलिए वेद आदेश देता है – 'उपसर्व माता भूमिम्'' भूमि माता की सेवा के लिए आगे आओ।

वेद एक अन्य दिशा में भी हमारा ध्यान आकृष्ट करता है हम अपने स्वार्थवश निरंतर पृथ्वी का दोहन किए जा रहे हैं इसके जंगलों को नष्ट कर रहे हैं। नदियों को प्रदूषित कर रहे हैं। पहाड़ों को नष्ट कर रहे हैं। जिससे पृथ्वी का वातावरण विषाक्त हो गया है यदि ऐसा ही रहा तो एक दिन पृथ्वी पर रहना भी दूभर हो जाएगा। वेद कहता है –

''यत्ते भूमि विखनामि क्षिप्र तदपि रोहतु'' हे मातृभूमि! मैं तेरी जो भी क्षति करूं जंगल आदि काटूं, वह पुनः समृद्ध हो जाए। जितने वृक्ष काटे जाएं उनके स्थान पर नए वृक्ष लगाए जाएं, जितनी भी गंदगी पृथ्वी पर फेंकी जाए, उसे शुद्ध करने के साधन भी उसी मात्रा में होने चाहिए, तभी वातावरण स्वच्छ रह सकेगा अन्यथा प्रदूषण होगा ही।

राष्ट्र में एक अन्य प्रकार का प्रदूषण भाषा प्रांत जाति तथा धर्म के नाम पर पार्थक्य का भी चल रहा है एक जाति दूसरी जाति को तथा एक धर्म वाला दूसरे धर्म वाले को एक प्रांत तथा भाषा वाला दूसरे प्रांत वाले को नष्ट करना चाहता है। दूसरे धर्म वालों का धर्मांतरण किया जाता है या उसकी हत्या कर दी जाती है। ईसाई तथा मुसलमान तो विदेशी धन के आधार पर गरीब लोगों को लालच तथा भय देकर ऐसा करते हैं। वेद कहता है हम सभी राष्ट्रवादी पृथिवी पर उसी प्रकार रहें, जैसे एक घर में उसके सदस्य रहते हैं – जनं विभ्रती बहुधा विवायसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्'' इस प्रकार रहने से ही पृथ्वी पर शान्ति रह सकती है।

आर्य समाज मानसरोवर कालोनी, रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह का भव्य आयोजन किया गया

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता

27 दिसम्बर, 2020 (रविवार) को धर्मचन्द्र गांधी आर्य समाज, मानसरोवर कालोनी, रोहतक में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। प्रातः 8 से 9 बजे तक यज्ञ महन्त बसन्त दास एवं पं. बृजकिशोर शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ और श्री सत्यपाल मधुर के भजनों का कार्यक्रम रहा, उसके पश्चात् सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन हुआ।

स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द जी की ऐतिहासिक भूमिका रही है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के जितने भी नेता थे उन सभी से प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित स्थान स्वामी श्रद्धानन्द जी का था। स्वतन्त्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी सहित समस्त नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी को अप्रतिम सम्मान देते थे और उनके व्यक्तित्व का लोहा मानते थे। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने देश, धर्म, समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में जो बहुमूल्य योगदान दिया वह इतिहास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम जहां गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के कारण विश्व इतिहास में अमर है वहां स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास भी स्वामी जी के योगदान की चर्चा के बिना अधूरा है। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के गुरुकुल की प्रतिष्ठा और यश का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब इंग्लैंड के प्रधानमंत्री रेम्जे मैकडोनॉल्ड गुरुकुल कांगड़ी पहुँचे तो उसने स्वामी श्रद्धानन्द जी से कहा कि मुझे खुफिया विभाग से सूचना मिली है कि यहाँ बम बनाये जाते हैं। मैं उसे देखने आया हूँ। इस पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने ब्रह्मचारियों को बुलाकर रेम्जे मैकडोनॉल्ड को दिखाया और कहा कि यह वो बम हैं जो अंग्रेजी सरकार को ध्वस्त करेंगे। ब्रह्मचारियों को देखकर जब मैकडोनॉल्ड ने स्पष्टीकरण मांगा तो स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि यहां बारूद के बम नहीं बनाये जाते। यहाँ विचारों के बम बनाये जाते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द और उनके गुरुकुल को देखकर वह इतने प्रभावित हुए कि इंग्लैण्ड जाकर अखबारों में उन्होंने बयान दिया कि यदि ईसा–मसीह का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहते हो तो गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन करो। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन अपने आपमें पंथ निरपेक्षता की एक अद्वितीय मिसाल है। वे पहले नेता तथा संन्यासी थे जिन्होंने जामा मस्जिद की मिम्बर से वेद मन्त्र बोलकर अपना व्याख्यान दिया था।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम का यह महान योद्धा भारतीय संस्कृति का रक्षक, आदर्श सुधारक, अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक स्वयं को देश तथा समाज के लिए समर्पित करता रहा। ऐसी महान आत्मा को मेरा शत्–शत् नमन।

अन्त में आर्य समाज के पदाधिकारियों ने स्वामी जी का माल्यार्पण एवं शॉल भेंट कर स्वागत किया। आर्य समाज के संरक्षक श्री नन्दलाल गांधी, प्रधान श्री सुरेश मित्तल, उपप्रधान श्री दिनेश नरूला व श्री राजेन्द्र नासा, मंत्री श्री यशपाल भाटिया, कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश नासा, श्री अजय आर्य, श्री दयानन्द गोगिया व श्री सुरेश गांधी आदि ने पुरुषार्थ करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस आर्य समाज का निर्माण श्री नन्दलाल गांधी ने अपने घर के बहुत बड़े एक हॉल को दान देकर प्रारम्भ किया है जो एक अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है।

पृष्ठ 1 का शेष

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में समारोह का आयोजन

जी का जीवन हमें तप, त्याग एवं बलिदान की याद दिलाता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सर्वस्व समर्पित करके यह स्थान बनाया था। हमें सदैव इसकी रक्षा करनी चाहिए और उनके पथ पर चलना चाहिए यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर श्री लोकेश शास्त्री के निर्देशन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने पर राज्य स्तर के प्रमाण पत्रों का वितरण स्वामी आर्यवेश जी द्वारा किया गया। गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. बिजेन्द्र शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। अन्त में अतिथियों का धन्यवाद डॉ. नवनीत परमार द्वारा ज्ञापित किया गया। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन युवा विद्वान डॉ. योगेश शास्त्री जी ने किया।

इसके पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के

अधिकारी, शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर वर्ग तथा जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, हरिद्वार के पदाधिकारियों ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ एक जुलूस के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द चौक पर स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा के समक्ष पहुँचकर उस देश, धर्म, संस्कृति के रक्षक स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

कार्यक्रम में जिला सभा के संरक्षक मा. सुमन्त सिंह आर्य, प्रधान श्री यशपाल सिंह सैनी, पूर्व प्रधान श्री हाकम सिंह आर्य, श्री महिपाल सिंह, डॉ. रामपाल आर्य, श्री अजयवीर आर्य आदि भी उपस्थित थे।

कैसे बचें इस प्लास्टिक दानव से

– नीरज गुप्ता

कैसे बचें इस प्लास्टिक दानव से – बचपन में हमने अपनी दादी अम्मा से एक कहानी सुनी थी कि एक बार जब दुनिया में ताप बहुत बढ़ गए और लोग स्वार्थ में अंधे होकर अपने कर्तव्य से विमुख होने लगे तो ईश्वर ने कुपित होकर श्राप दिया कि शीघ्र ही इस दुनिया में एक अत्यंत बलशाली दानव पैदा होगा जिसे ना आग जला सकेगी ना पानी गला सकेगा और ना ही समय के साथ उसका क्षय होगा, यहां तक कि उसे यदि धरती में गहरे दबा दिया जाएगा तो भी उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा उल्टे वह उस स्थान को ही सदा के लिए अपवित्र कर देगा। इस प्रकार एक तरह से वह मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेगा। इतना ही नहीं वह हमें प्रलोभन देकर हम से ही अपने अन्य प्रतिरूपों का निर्माण करायेगा जो चारों ओर फैल कर हमारी प्राकृतिक संपदा को नष्ट करना प्रारंभ कर देगा और एक दिन इस धरती पर प्राणी मात्र के अस्तित्व के लिए ही खतरा बन जाएगा।

यह सुनकर लोग घबरा गए और ईश्वर से क्षमा प्रार्थना कर उस दानव से मुक्ति पाने का उपाय पूछने लगे। तब ईश्वर ने कहा कि यदि पीड़ित लोग एकाग्र चित्त होकर निस्वार्थ भाव से कठिन तपस्या करें तो उसे समाप्त करने का उपाय उन्हें स्वयं सूझ जाएगा। हां इसके लिए उन्हें दानव द्वारा दिए गए प्रलोभन से बचना होगा और उसके वास्तविक स्वरूप को समझकर उसे समूल नष्ट करने हेतु अनेक सामूहिक प्रयास करते रहना होगा, जब तक कि इस धरती से उसका अंतिम प्रतिरूप भी नष्ट ना हो जाए।

युवावस्था आते आते हम इस कहानी को भूल गए। फिर प्लास्टिक नामक पदार्थ का चलन शुरू होकर तेजी से उसका प्रयोग बढ़ता चला गया और पॉलिथीन व थर्माकोल जैसे उसके प्रतिरूप हमारे जीवन के अभिन्न अंग बनते गए। प्रारंभ में उसके दुष्परिणाम से अनजान लोग निश्चिन्त होकर पैकिंग सामग्री खाने–पीने के पात्र यहां तक कि देवी–देवताओं की मूर्तियां व चित्रों के लिए भी व्यापक रूप से इसका प्रयोग करने लगे और बेकार हो जाने के पश्चात यहां वहां डालकर बेफिक्र रहते रहे। परंतु धीरे–धीरे जब इस दानव के असली स्वभाव की जानकारी लोगों को मिलनी शुरू हुई तो उनके माथे पर चिंता की लकीरें उभरने लगी, तब हमें एहसास हुआ कि शायद दादी अम्मा की कहानी के दानव का जन्म हो चुका है।

जैसा कि हम जानते हैं कोई भी नैसर्गिक पदार्थ जिस प्रक्रिया से बनता है उसकी विपरीत क्रिया से नष्ट होकर फिर उसी पदार्थ के पुनर्निर्माण का कारक बन जाता है। जैसे लोहा खान से निकलकर निर्माण कार्य में प्रयुक्त होता है फिर धीरे–धीरे जंग का रूप धर मिट्टी में मिलता जाता हैं, जहां एक लंबी प्राकृतिक प्रक्रिया के फलस्वरूप पुनः लोहे के विशाल भंडार का रूप ले लेता है। इसी प्रकार पशु जो चारा खाते हैं वह गोबर के रूप में परिवर्तित हो खाद बन कर उसी चारे को पुनः उपजाने में सहायक बनता है और निर्माण विनाश पुनर्निर्माण का यह क्रम अनवरत चलता रहता है।

परन्तु प्लास्टिक नामक कृत्रिम पदार्थ ने इस स्वाभाविक चक्र को निर्ममता पूर्वक तोड़ डाला। कहानी के दानव की तरह एक बार जिस प्लास्टिक पदार्थ का निर्माण हो गया प्रयोग के बाद ना तो उसे जलाया जा सकता है क्योंकि उससे घातक विशैली गैसे पैदा होती हैं, पानी से यह गलता नहीं और कीटाणु जन्य क्षरण क्रिया इस पर होती नहीं।

परिणाम यह हुआ कि जहां देखो पॉलिथीन थर्माकोल आदि जैविक और अनिस्तारिणीय कचरे के पहाड़ नजर आने लगे। धीरे–धीरे स्थिति नियंत्रण से बाहर होती गई और आज क्या सुरम्य पर्वत श्रृंखलाएं, क्या सागर का शांत किनारा और क्या पवित्र देवगृह, प्लास्टिक पदार्थों के ढेर सब जगह दिखाई दे जाएंगे, जो अपनी विद्रूपता दुर्गंध व सड़न से त्राहि–त्राहि मचा रहे हैं।

इतना सब होने पर भी बहुत से लोग आज भी यह सोचकर बेपरवाह हैं कि यह तो विश्वव्यापी समस्या है हम क्यों इसके विषय में सोच सोच कर परेशान हों। समय आने पर इसका निदान भी हो ही जाएगा, तब तक हम इसके प्रयोग से मिलने वाली सुविधाओं से क्यों वंचित रहें। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि इस गंभीर समस्या के निदान के लिए प्रभावी उपाय अपनाने के साथ–साथ हम इसके दुष्प्रभावों की विभीषिका के विषय में जन सामान्य को जागरूक भी करें जिससे सब को एहसास हो कि यह एक दो लोगों या किसी वर्ग विशेष के हित का नहीं बल्कि सामूहिक अस्तित्व का प्रश्न है। जिसके विरुद्ध पूरी दुनिया को एक होकर शीघ्र ही बड़े पैमाने पर अभियान छेड़ना होगा अन्यथा बात हाथ से निकल जाएगी।

पॉलिथीन के दुष्प्रभाव

स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव – पॉलिथीन पदार्थ स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होते हैं। इनके लगातार संपर्क से तपेदिक त्वचा व श्वास संबंधित रोगों के होने की संभावना बढ़ जाती है। कुछ लोग केतली की जगह गर्म चाय लाने या फिर गर्म चाशनी से भरे गुलाब जामुन ले जाने तक के लिए पॉलिथीन की थैलियों का प्रयोग करते हैं इससे गर्मी पाकर पॉलिथीन के विषैले तत्व खाद्य पदार्थों में प्रवेश कर जाते हैं जो कैंसर, गुर्दे व पेट संबंधी गंभीर रोगों के होने का खतरा उत्पन्न कर देते हैं।

बीमारी फैलने की आशंका

आजकल घर का हर कचरा जैसे फल, सब्जियों के छिलके, सूखी रोटी आदि पॉलिथीन की थैलियों में भरकर फेंकने का चलन हो गया है। इसी प्रकार अस्पतालों से निकला चिकित्सकीय अपशिष्ट भी प्लास्टिक के बोरों में भरकर कूड़े में डाल दिया जाता है। अब समस्या यह होती है कि जहां हरे कचरे व चिकित्सकीय अपशिष्ट में कुछ समय पश्चात ही क्षरण क्रिया प्रारंभ हो जाती है वही पॉलिथीन की थैलियां व प्लास्टिक के बोरे जैविक पदार्थों से बने होने के कारण जैसे के तैसे ही रहते हैं। अतः इन में पैदा हुए कीटाणु प्राकृतिक प्रक्रिया पूरी होने पर स्वयमेव नष्ट हो जाने के स्थान पर वही बने रहते हैं और अनेक रोगों के फैलने की संभावना को जन्म देते हैं। दूसरे पॉलिथीन की थैलियां नालियों में पहुंचकर उनका मार्ग अवरुद्ध कर देती हैं, जिससे गंदा पानी सड़कों पर बह कर कई प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है।

पर्यावरण के लिए विनाशकारी – पॉलिथीन युक्त पदार्थ कई खतरनाक गैसों का निर्माण करते हैं जो पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक होती हैं और आसपास के वातावरण व भूजल को विषाक्त बना देती हैं। कुछ लोग पूजन सामग्री फूल व तस्वीरें आदि पॉलिथीन में भरकर नदियों में फेंक देते हैं जहां यह न केवल जल को दूषित करती है अपितु जलीय जीवो के अस्तित्व के लिए भी खतरा बन जाती है।

खेती के लिए हानिकारक – खेती योग्य भूमि के जितने भाग में पॉलिथीन युक्त पदार्थ पहुंच जाते हैं उसमें फसल पैदा होने की संभावना न के बराबर रह जाती है। क्योंकि उस भाग को ऊपर से सूर्य की रोशनी व नीचे से जल व अन्य पोषक पदार्थों की आपूर्ति पूरी तरह अवरुद्ध हो जाती है।

जीव जंतुओं के लिए जानलेवा – जब हरा कचरा पॉलिथीन की थैलियों में भरकर फेंका जाता है तो उसे खाने के लालच में आवारा कुत्ते व गाय आदि जंतु पॉलिथीन को चबाकर काट डालते हैं और उसका एक बड़ा अंश साथ में उदरस्थ कर जाते हैं, जिससे कई मामलों में उनकी दर्दनाक मौत तक हो जाती है।

पॉलिथीन मिश्रित पदार्थों की दोहरी मार आजकल पैकिंग सामग्री, पुस्तकों, पत्रिकाओं के मुख्य पृष्ठ, निमंत्रण पत्रों, विजिटिंग कार्डों आदि में मात्र सजावट व चमक लाने के लिए कागज पर प्लास्टिक की पतली परत चढ़ा दी जाती है जो आसानी से अलग नहीं होती। जब पैकिंग खोल दी जाती है या पुस्तक पत्रिकाएं रद्दी में बेच दी जाती हैं तो कागज वाला कबाड़ी तो उसे पॉलिथीन मान कर फेंक देता है, जबकि

अगले पृष्ठ पर जारी

जीवन को ऊंचा कैसे उठाएं

– मंजु गुप्ता

किसी व्यक्ति ने किसी संत से पूछा इस जीवन को सुंदर बनाने की चाह है।

इसलिए हमारे लिए कोई उपदेश करो कि जीवन को और अच्छा कैसे बनाएं?

फकीर संत ने अपने पास रखी हुई तीन चीजें उठाकर उस व्यक्ति को दे दी थोड़ी सी रुई, एक मोमबत्ती और सुई ।तीनों चीजें हाथ में देने के बाद कहा बस हो गया उपदेश अब जाओ।

वह आदमी चल पड़ा, पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि फकीर संत ने यह चीजें क्यों दी है। वह व्यक्ति वापस फकीर संत के पास जाकर बोला – महाराज यह जो कुछ आपने दिया है यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

संत ने कहा – ''यह जो रुई दी है। इसकी एक ही खासियत है कि यह धागा बनकर हर एक की लाज रखती है। मेरे परमात्मा का प्यारा इंसान भी वही है जो दूसरों की लाज ढका करता है और दूसरों को संरक्षण देता है। और यह मोमबत्ती, मोम बनकर जलती जरूर है लेकिन प्रकाश बनकर सब जगह फैल जाती है। ऊंचाई तक पहुंच जाती है। तुम भी इसी रूप को धारण करो। पूरी जिंदगी लगा देना, दूसरों के लिए प्रकाश बनकर रहना।''

''तीसरी चीज तुम्हें दी है – 'सुई'। सुई के बिना संसार का काम नहीं चलता। टुकड़ों को, कटे हुए को, फटे हुओं को जोड़ने का काम सुई ही करती है । सुई के बिना कोई जुड़ा नहीं करता। तो दुनिया में भी परमात्मा का प्यारा वही है जो फटे हुए दिलों को सिला करता है, जो टूटे दिलो को जोड़ा करता है, बिखरे हुओं को जो इकट्ठा करता है।'' यही मेरा उपदेश है।

पृष्ठ 5 का शेष

कैसे बचें इस प्लास्टिक दानव से

पॉलिथीन के कबाड़ी पॉलिथीन निर्माताओं द्वारा उसे कागज के साथ मिश्रित होने के कारण स्वीकार न किए जाने के कारण छोड़ देते हैं परिणाम यह होता है कि पॉलिथीन मिश्रित कागज यूं ही जगह–जगह पड़े सड़ते रहते हैं।

प्लास्टिक के दान से बचने के उपाय – जैसा कि उपरोक्त कहानी में प्रतीकात्मक रूप से बताया गया, इस समस्या से निजात पाने के लिए हम सभी को तात्कालिक लाभ का लालच त्याग कर कठोर तपस्या, (निस्वार्थ भाव से जनहित के लिए किया जाने वाला गहन अनुसंधान कार्य भी किसी तपस्या से कम नहीं होता) व भगीरथ प्रयत्न करने होंगे और हर स्तर पर इससे निपटने का प्रबंध करना होगा।

गहन अनुसंधान को बढ़ावा प्लास्टिक पदार्थों के समुचित निस्तारण व पुनर्प्रयोग के निरापद वैज्ञानिक तरीके खोजने हेतु सरकार द्वारा गहन अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए, जिससे इसके हानिकारक परिणामों को कम किया जा सके।

चुनिंदा स्थितियों को छोड़कर इसका प्रयोग बंद या न्यूनतम करना

ठोस प्लास्टिक को छोड़कर इसके अन्य प्रकार जैसे घरेलू सामान ले जाने व पैकिंग के लिए प्रयोग की जाने वाली पॉलिथीन की थैलियां, गुटके व तरल पदार्थों के पाउच, पॉलिथिन मिश्रित या इसकी परत चढ़े कागज व कपड़े आदि पर यथासंभव तुरंत प्रभावशाली ढंग से रोक लगाई जाए और नियम विरुद्ध इनका प्रयोग करने पर भारी जुर्माने की व्यवस्था हो। साथ ही प्लास्टिक पदार्थों पर देवी–देवताओं के चित्र छापने पर भी प्रतिबंध लगाया जाए जिससे पुराने हो जाने पर लोग इनको जल में प्रवाहित कर पर्यावरण को दूषित ना करें।

पर्यावरण हितकारी पैकिंग मैटेरियल के प्रयोग को प्रोत्साहन – सरकार को चाहिए कि वह कपड़े आदि से बने पर्यावरण हितकारी पैकिंग मैटेरियल के प्रयोग को प्रोत्साहन देने हेतु समुचित कदम उठाए। नागरिकों को भी चाहिए कि वे पॉलिथिन का प्रयोग कम से कम करें। जब बाजार से सामान खरीदने के लिए निकले तो कपड़े का थैला साथ लेकर जाएं अन्यथा दुकानदार से कपड़े की थैली में ही पैकिंग करने का आग्रह करें।

खाद्य पदार्थों का सेवन करने के लिए जैविक निस्तारणीय पात्रों के प्रयोग को प्राथमिकता

आजकल ट्रेनों व पार्टियों में चाय कॉफी पीने व खाना खाने तथा मंदिरों में प्रसाद आदि वितरित करने के लिए भी थर्माकोल निर्मित पात्रों का प्रयोग बहुतायत से होने लगा है। यदि कागज या वृक्ष के पत्तों से पात्र बनाए जाते हैं तो उन पर भी पॉलिथीन की बारीक परत चढ़ी होती है। परिणाम यह होता है कि जगह जगह फेंके गए थर्माकोल के बर्तनों के ढेर, सड़े हुए खाने की दुर्गंध से भरे पड़े रहते हैं। अतः हमें दृढ़ निश्चय करना होगा कि हम खाने पीने के लिए मिट्टी, चीनी मिट्टी, धातु अथवा विशुद्ध पत्तों से बने पात्रों का ही प्रयोग करेंगे। थर्माकोल व पॉलिथीन मिश्रित पात्रों का नहीं। गर्म तरल व चिकनाई आदि खाद्य पदार्थों को रखने के लिए भी पॉलिथिन का प्रयोग कदापि ना करें क्योंकि यह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है।

हरित व प्लास्टिक अवशिष्ट का पृथक संग्रहण व निस्तारण

पर्यावरण की दृष्टि से जागरूक बहुत से व्यक्ति घर में पैदा होने वाले कचरे को प्रकृति के अनुसार अलग–अलग थैलो, डिब्बों में इकट्ठा कर लेते हैं। एक बड़े थैले में ठोस कचरा जैसे प्लास्टिक के टूटे खिलौने, उपकरण आदि धातु के बर्तन पुस्तक कॉपियों के पन्ने आदि छोटी–छोटी थैलियों में अलग–अलग भरकर रख सकते हैं जिसे समय–समय पर कबाड़ी को बेच दिया जाए। इससे पैसों का लाभ बेशक नगण्य हो पर यह सभी सामान पुनर्निर्माण हेतु समुचित स्थान पर पहुंच जाने से पर्यावरण के लिए बहुत लाभकारी होगा। दूसरे थैले में पॉलिथीन की पतली थैलियां व पाउच आदि भरते जाएं, जिन्हें समय–समय पर कूड़ा बीनने वाले लोगों को बिना पैसे लिए दे दिया जाए। इससे एक ओर जहां उनको कुछ आय हो जाएगी वहीं यह वस्तुएं इधर–उधर पड़ी रहकर पर्यावरण को दूषित करने के स्थान पर पुनर्निर्माण प्रक्रिया में आ जाएंगी। तीसरे थैले में हरा कचरा जैसे फल व सब्जियों के छिलके सफाई में इकट्ठे हुए धूल मिट्टी आदि डाल सकते हैं जिसे सुविधा उपलब्ध होने पर एक गड्ढे में इकट्ठा कर अपने किचन गार्डन में प्रयोग करने हेतु कंपोस्ट खाद बना सकते हैं अन्यथा समीप के कूड़ेदान में डाल सकते हैं।

निर्धारित स्थान पर प्लास्टिक कचरे का संग्रहण

सबसे पहले देश के हर ग्राम नगर में इधर उधर पड़े प्लास्टिक कचरे को इकट्ठा कर पुनर्निर्माण हेतु भेजने का कार्य युद्ध स्तर पर एकीकृत वृहद योजना के तहत एक साथ किया जाए। जिससे अब तक उत्पन्न कचरे से एक बार पूरी तरह से निजात मिल सके उसके पश्चात इसे इकट्ठा करने के लिए प्रत्येक ग्राम नगर में अलग से एक स्थान निर्धारित कर दिया जाए। इसके अतिरिक्त कहीं और ऐसा कचरा डालने पर भारी जुर्माने का प्रावधान किया जाए। साथ ही हरा कचरा डालने के लिए एक अलग स्थान निर्धारित किया जाए जहां उससे बायो कंपोस्ट बायोगैस का निर्माण कर बहुमूल्य ऊर्जा की बचत की जाए।

प्लास्टिक कचरे के स्रोत, माल के निर्माताओं का दायित्व निर्धारण

सरकार को चाहिए कि प्लास्टिक पदार्थों के निर्माताओं का दायित्व सुनिश्चित करें कि वे जितनी मात्रा में वार्षिक आधार पर ऐसे पदार्थों का उत्पादन करें, उतनी ही मात्रा में उस प्रकार के पदार्थों का अपशिष्ट वापस लेकर उसका पुनर्निर्माण अथवा संचित निस्तारण करने के लिए बाध्य हों। साथ ही इस कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु वह ऐसे अपशिष्ट को उन तक पहुंचाने वाले लोगों को निर्धारित दर से कुछ धनराशि का भुगतान भी करें जिस का निर्धारण उस पदार्थ के विक्रय मूल्य के एक छोटे अंश के रूप में किया जा सकता है।

यदि इन उपायों से इस विकराल समस्या का पूर्ण रूप से निदान होना तुरंत संभव ना हो तब भी एक तो समस्या और अधिक बढ़ेगी नहीं और यदि दादी अम्मा की कहानी पर भरोसा कर हम सब लगातार इन उपायों को जिम्मेदारी के साथ करते रहे तो एक दिन अवश्य आएगा जब इस दानव का प्रकोप कम होते होते समाप्त ही हो जाएगा।

शिक्षा में 'जीवेम' से पहले 'पश्येम' की आवश्यकता

–पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

जीवन एक यज्ञ है। हम यजमान हैं। हम जीवन के अधिकारी हैं। अधिकारी के लिए योग्यता की आवश्यकता है। हर यज्ञ के अपने–अपने धर्म हैं जिनके द्वारा यज्ञ की पूर्ति होती है। जीवन यज्ञ के भी धर्म हैं। जीवन का अर्थ केवल सांस लेना या खाना–पीना नहीं हैं। जीवन की एक विधि है। जो विधिवत् जीवन नहीं, वह मानव जीवन नहीं। यदि जीवन विधिवत् बनाना है तो विधि के ज्ञान की आवश्यकता होगी। इसलिए जीवन की विधि की स्कीम बनाने से पूर्व ज्ञान की आवश्कता होगी। पशु जीवन ज्ञान के बिना सम्भव है परन्तु मनुष्य जीवन नहीं। यदि आप स्वास्थ्य को नियमित बनाना चाहते हैं तो आयुर्वेद का सामान्य ज्ञान आवश्यक होगा। यदि आप धार्मिक बनना चाहते हैं तो धर्मशास्त्र को पढ़ना होगा। जीवन का कोई विभाग जिस पर मनुष्य का अधिकार है बिना ज्ञान के सम्भव नहीं है। हम प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं 'पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्' यहां पहले पश्येम है फिर जीवेम, ऐसा क्यों है? इस पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि जीवन के लिए पश्येम का अर्थ केवल देखना नहीं अपितु सभी प्रकार का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना है। 'प्रत्यक्ष' प्रमाण में आंख, कान, नाक आदि शामिल हैं। अतः 'पश्येम' में भी ऐसा ही समझना चाहिए। इसलिए 'जीवेम' का अर्थ होगा 'धर्मपूर्वक जीना'।

'आत्मा' का साधारण लक्षण किया गया है – जिसमें 'कर्तुम्' अकर्तुम्; अन्यथा कर्तुम्' की शक्ति हो। कर भी सके, न भी कर सके और उल्टा भी कर सके। क्या करूं, क्या न करूं, इसके लिए ज्ञान की आवश्यकता होगी।

अर्थात् आंखें खोलकर जीओ। आंखे बन्द करके नहीं। धारा पर बहो नहीं, धारा पर तैरो। तैरने के लिए प्रयत्न करना होगा।

igyh cht 'kfDr ;k dk fodkl &

एक बात और कही है। मन्त्र के पहले भाग की 'पश्येम' आदि वाक्यों के साथ एक वाक्यता है, पहले वाक्य में 'शुक्र' का उल्लेख है। क्या 'शुक्र' चक्षु का विशेषण है? यदि ऐसा मानोगे तो एकवाक्यता स्पष्ट न होगी। शुक्र का अर्थ है बीज शक्ति जो जन्म के साथ ईश्वर देता है। उसका विकास करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। आंख का विकास करके मनुष्य अच्छा द्रष्टा होता है। हर एक आंख वाला देख नहीं सकता। वेद ने कहा 'पश्यन् न ददर्श'। देखता हुआ नहीं देखता। 'श्रृण्वन् न श्रृणोति'। अतः हमको अपनी शक्तियों का पहले विकास करना पड़ेगा। फिर उन विकसित शक्तियों का हम जीवन निर्माण में उपयोग कर सकेंगे।

thou fodkl dh fy, ikp ckrsa vko';d

हमारी प्रार्थना में जीवन विकास के मूल तत्त्वों की ओर संकेत है। पांच बातें बताई – पश्येम, जीवेम, श्रृणुयाम, प्रब्रवाम और अदीनाः स्याम। श्रृणुयाम का अर्थ है वेद सुनें, पढ़ें, प्रब्रवाम का अर्थ है सुने हुए वेद का दूसरों को उपदेश दें। यदि चार बातें पूरी हो गईं तो अदीनता का फल तो मिला रखा है। अदीनता ही स्वातन्त्र्य है। अदीनता ही मोक्ष है। अदीनता ही परम धाम है। वही परम पुरुषार्थ है। उस पद की प्राप्ति के लिए ये सब साधन हैं। और सबसे पहला साधन है 'पश्येम'। और सम्पूर्ण शिक्षा शास्त्र का यही मूल तत्त्व है। जो शिक्षा जीवन में पश्येम की (दर्शन की, चिन्तन की, विवेचन की) शक्ति उत्पन्न करती है, वह सफल है, शेष असफल। हमारी शिक्षा पद्धति की गति दिशा इस ओर हो तो शिक्षा सफल होगी और राष्ट्र रथ आगे बढ़ सकेगा।

93 वां पंडित रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्न

क्रांतिकारियों के सिरमौर थे रामप्रसाद बिस्मिल –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

स्वतन्त्रता आंदोलन की क्रांति के जनक थे बिस्मिल – डॉ जयेन्द्र आचार्य

शनिवार,19 दिसम्बर 2020, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के 93 वें बलिदान दिवस के अवसर पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन जूम पर किया गया। यह कोरोना काल में परिषद् का 137 वां वेबिनार था।

वैदिक विद्वान आर्ष गुरुकुल नोएडा के प्राचार्य डॉ जयेन्द्र आचार्य ने कहा कि अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल समस्त क्रांतिकारियों के गुरु थे व देश की आजादी के लिए संघर्षरत्त गर्म दल के क्रांति के जनक थे। शाहजहांपुर की उर्वरा धरती में महान क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ।आर्य समाज शाहजहांपुर के सत्संग में स्वामी सोमदेव जी के प्रवचनों को सुनके बालक बिस्मिल के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा।उनसे प्रभावित होकर पंडित बिस्मिल ने सत्यार्थ प्रकाश पढा, जिसको पढ़ कर बिस्मिल का सम्पूर्ण जीवन बदल गया।नशे जैसी दुष्प्रवृत्ति में जकड़े नौजवानों ने सब बुराइयों को छोड़कर अपने जीवन को संयम तथा सदाचार के मार्ग पर लगा दिया। महर्षि दयानन्द को अपना गुरु मानकर देश को आजाद कराने का संकल्प लिया तथा सम्पूर्ण जीवन देश को आजाद कराने में लगा दिया तथा देश की आजादी की लड़ाई लड़ते लड़ते फाँसी के फंदे को चूम लिया।उन्होंने फांसी के फंदे को चूमते हुए कहा था 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूं' आचार्य जी ने कहा कि 'जो फांसी पर चढ़े खेल में उनको याद करे, जो वर्षों तक सड़े जेल में उनको याद करे'। उन्होंने बिस्मिल के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि क्रांतिकारियों के सिरमौर थे पंडित रामप्रसाद बिस्मिल। बिस्मिल से प्रेरणा पाकर अनेक नोजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।उनके घनिष्ठ मित्र अशफाक उल्ला खां भी उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया था और अनेकों युवा साथियों को लेकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।देश की आजादी की लड़ाई को मजबूत करने के लिए हथियारों और धन की आवश्यकता थी जिसे पूरा करने के लिए प्रसिद्ध काकोरी काण्ड को अंजाम दिया। देश के युवाओं के लिये उनका जीवन सदियों तक प्रकाश देता रहेगा।आज इतिहास को ठीक कर क्रांतिकारियों को सही सम्मान देने की आवश्यकता है, जिससे आने वाली पीढ़ी प्रेरणा ग्रहण कर सके ।

कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेता वेद पाल आर्य (संरक्षक, आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत) ने कहा कि शहीद देश की अमानत है,समय समय पर उनको याद करके हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर नयी उर्जा का संचार कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि बिस्मिल पहले क्रांतिकारी थे जिनका वजन फांसी वाले दिन बढ़ गया था।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा की रामप्रसाद बिस्मिल को वैदिक धर्म को जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इससे उनके जीवन में नये विचारों और विश्वासों का जन्म हुआ। उन्हें एक नया जीवन मिला।उन्हें सत्य, संयम,ब्रह्मचर्य का महत्व आदि समझ में आया।

योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि बिस्मिल बहुत अच्छे शायर थे, उनका लिखा गीत 'सरफरोशी की तमन्ना' हर व्यक्ति की जुबान से गाया जाता है।बिस्मिल ने फांसी से तीन दिन पहले जेल में अपनी आत्म कथा लिखी थी जो हर नौजवान को पढ़नी चाहिए।

सुप्रसिद्ध गायिका जनक अरोड़ा,रविन्द्र गुप्ता,ईश्वर देवी,विचित्रा वीर,अशोक गुगलानी ,काशीराम रजक,बिंदु मदान आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से जगदीश मालिक,अमरनाथ बत्रा,ओम सपरा, देवेन्द्र गुप्ता,देवेन्द्र भगत,नरेश प्रसाद आदि उपस्थित थे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

महात्मा सम्मान मुनि का सन्यास आश्रम में प्रवेश

महर्षि दयानन्द आर्ष वेद महाविद्यालय, 119 गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली–49 में आयोजित चतुर्वेद परायण यज्ञ के शुभ अवसर पर दिनांक 11 दिसम्बर, 2020 को यज्ञ वेदी पर आर्य विद्वानों और ब्रह्मचारियों की उपस्थिति में महात्मा सम्मान मुनि जी ने स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में उनसे संन्यास आश्रम की दीक्षा ग्रहण की।

सम्मान मुनि जी ने यज्ञवेदी पर 108 बार जलाभिषेक कर पुत्रेषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा के परित्याग का व्रत धारण कर वेद ज्ञान के प्रचार–प्रसार और मानव मात्र के कल्याणार्थ शेष जीवन पर्यन्त सेवारत रहने का व्रत धारण किया। जिसके प्रतीकार्थ सम्मान मुनि से आत्म सम्मान और अहंकार को त्याग कर उपस्थित जन समूह से भिक्षा मांग कर प्राप्त धन को दीक्षा गुरु के चरणों में समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

तदोपरान्त यज्ञ ब्रह्मा स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के आदेशानुसार स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने संन्यास आश्रम के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संन्यासी मानव समाज का शिरोमणि होता है क्योंकि उसे अपने गत 75 वर्ष की आयु का अनुभव और ज्ञान प्राप्त होता है, सत्य और असत्य का साक्षी होता है। अतः अपने ज्ञान और अनुभव से मानव समाज को उन्नति के मार्ग पर चलने हेतु दिशा निर्देश देने में निःस्वार्थ भाव से सक्षम होता है।

स्वामी जी ने कहा कि संन्यासी को भी मान–अपमान आदर–निरादर और सुख–दुःख में अचिन्तित रहते हुए अपने कर्त्तव्य पालन में निर्भय होकर समाजोत्थान हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए। संन्यासी के समक्ष सम्पूर्ण संसार एक परिवार के समान होता है। अतः किसी से भी ईर्ष्या, द्वेष, राग, लगाव और इच्छा नहीं रखनी चाहिए।

परमात्मा को सदैव अपना साथी सहायक और रक्षक मानकर निःस्वार्थ और निर्भय होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए।

दीक्षा उपरान्त सम्मान मुनि जी का संन्यासी के रूप में स्वामी सुमित्रानन्द नाम निश्चय कर नाम उद्घोष किया गया।

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'
लेखक–स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ–455

'मनुस्मृति'
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ–595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक से मंगाने पर एक प्रति के हिसाब से 35 रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

ओ३म्

निमंत्रण पत्र   116वां वेबिनार

अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में

(अंतर्राष्ट्रीय वैदिक संस्कृति संगम)

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान एवं अध्यात्म पथ के यशस्वी संपादक आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी के जन्मदिवस के शुभावसर पर

ऑनलाइन जूम के माध्यम से विशाल भजन संध्या, वैदिक सत्संग एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

शुक्रवार, दिनांक 1 जनवरी, 2021 को सायं 4.00 बजे से

अध्यक्षता

पूज्य स्वामी आर्यवेश जी
विश्व विख्यात आर्यजगत के मूर्धन्य संन्यासी एवं अनेक संस्थाओं के प्राण

सान्निध्य

पूज्य स्वामी डॉ. आर्येशानन्द सरस्वती जी
आर्यजगत के मूर्धन्य संन्यासी
संस्थापक – मनन आश्रम, पिंडवाड़ा)

मुख्य अतिथि

श्री हरिदेव रामधनी जी
प्रधान
आर्यसभा मॉरिशस

सान्निध्य

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी
अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार एवं प्रधान संपादक – अध्यात्म पथ

सारस्वत अतिथि

श्री विश्राम वाचस्पति जी
स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रपौत्र
पूर्व फीचर संपादक दैनिक हिन्दुस्तान

विशिष्ट अतिथि

श्री ओम सपरा जी
मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट एवं वरिष्ठ साहित्यकार

विशिष्ट अतिथि

श्रीमती सरोजनी जौहर
प्रख्यात कवयित्री एवं उप प्रधान
इन्डो केनेडियन सिनियर क्लब, कनाडा

विशिष्ट अतिथि

श्रीमती प्रेम हंस जी
सहायिका, सेवा इन्टरनेशनल, मेलबोर्न आस्ट्रेलिया

विशिष्ट अतिथि

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी
निदेशक, मिशन आर्यावर्त्त

गायक कलाकार

श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन'

श्री विजयभूषण आर्य

श्रीमती कविता आर्या

श्री नरेश वर्मा 'धुरन्धर'

आयुर्वेदाचार्य

डॉ. सुषमा आर्या

सम्मान – पूज्य स्वामी आर्यवेश जी को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान एवं ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी को विशिष्ट मानव रत्न सम्मान से विभूषित किया जायेगा

मुख्य आकर्षण – आयुष्काम मंत्रों का पाठ, सत्यार्थप्रकाश परीक्षा परिणाम की घोषणा, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन, मधुमेह रोग को दूर करने के लिए विशेष उद्बोधन, देश–विदेश के ख्याति प्राप्त विद्वानों, साहित्यकारों, राष्ट्रीय कवियों, आर्य नेताओं, राजनेताओं एवं राष्ट्र के कर्णधार महानुभावों का अभिनन्दन एवं उद्बोधन।

इस अवसर पर देश–विदेश के सभी आर्यजनों, सहयोगी जनों एवं अध्यात्म पथ पत्रिका के परिवार जनों से निवेदन है कि इस जूम के माध्यम से जुड़ कर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को यशस्वी तथा दीर्घ जीवन की शुभकामनाएं प्रदान करें।

Zoom meeting link- https://us02web.zoom.us/j/6825200248?pwd=andhMVQ4ak94cU1ybXRwa0lpcFpzUT09
Meeting id- 682 520 0248 Password - om
कार्यक्रम का सीधा प्रसारण फेसबुक लिंक https://www.facebook.com/profile.php?id=100004953968393 पर लाइव रहेगा।

निवेदक

प्रिं. अरुण आर्य संरक्षक	यशपाल आर्य संरक्षक	अशोक सुनेजा परामर्शदाता	अश्विनी नांगिया प्रबन्ध सम्पादक
सुरिन्द्र चौधरी सह सम्पादक	सूर्यकान्त मिश्रा सह सम्पादक	डॉ. पूनम सुनेजा सह सम्पादक	श्रीमती पूनम नांगिया सह सम्पादक

सम्पर्क सूत्र : 9810084806, 8587849718, 9968379753

प्रकृति माता का अद्भुत चमत्कार

एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेढि स उ रेढि मातरम्।।

—ऋ० १०/११४/४

ऋषिः—सध्रिर्वैरूपो घर्मो वा तापसः।। देवता—विश्वेदेवाः।। छन्दः—जगती।।

विनय—संसार में आया हुआ जीव क्या है?यह एक सुपर्ण पक्षी है जो अन्तरिक्ष-समुद्र में विहार करने आया हुआ है। यह अपने ज्ञान और कर्म के पंखों से इधर-उधर उड़ता हुआ इस सब भुवन को विविध प्रकार से देखने का आनन्द ले-रहा है। संसार-सागर में मनोमयादि सूक्ष्म संसारान्तरिक्ष में एक योनि से दूसरी योनि में भोग भोगने के लिए फिरता हुआ और वहां विविध प्रकार के भगों को प्राप्त करता हुआ यह जीव गति कर रहा है, उड़ रहा है। अभी तक जीव को मैं इसी संसाराकाश के विकारी सुपर्ण के रूप में देखता रहा हूँ, पर आज समीपता से देखा है, ज्ञानपरिपक्व हुए मन से इसे समीपता से देख रहा हूँ, तो इस जीव-प्रकृति-संयोग को मैं और ही रूप में देख रहा हूँ कि माता उसे चूम रही है और वह माता को चाट रहा है। प्रकृति माता में कहूंगा परमेश्वरी प्रकृति-जीव से प्रेम कर रही है और जीव इस माता से सुख पा रहा है। जीव के प्रकृति से जुड़ने का, जीव के संसार में आने का यही रहस्य है। कई ऋषि कहते हैं कि जीव और प्रकृति का संयोग लूले और अन्धे का संयोग है, पर यह बात शायद परमेश्वरहीन प्रकृति के विषय में होगी। परमेश्वरी प्रकृति तो अन्धी नहीं है। मुझे तो यह सम्बन्ध माता और पुत्र का लगता है। इसलिए यह सम्बन्ध केवल भोग में नहीं किन्तु अपवर्ग में (अपवर्ग के भोग में) भी बना रहता है। पुत्र माता के बिना नहीं रह सकता और माता पुत्र को चाहती है। ऋषि ने ठीक कहा है "पृथिवी सब भूतों को मधु है और सब भूत पृथिवी को मधु हैं।" वास्तव में दोनों एक-दूसरे से सुख पा रहे हैं और एक-दूसरे को सुख दे रहे हैं। क्या हम ही प्रकृति से सुख पाते हैं और प्रकृति हमसे सुख नहीं पाती?नहीं। तनिक प्रकृति को बेजान मत समझो, प्रकृति को "परमेश्वर की प्रकृति" के रूप में देखो।

शब्दार्थ—एकः सुपर्णः=एक सुपर्ण पक्षी है सः=वह समुद्रम्=इस संसारान्तरिक्ष के समुद्र में आविवेश=आया है सः=वह इदं विश्वं भुवनम्=इस सम्पूर्ण संसार को विचष्टे=विविध प्रकार से देखता है, इसका मज़ा लेता है, परन्तु तम्=उसे पाकेन मनसा=परिपक्व ज्ञानवाले मन से अन्तितः=समीपता से अपश्यम्=देखा है तो मैं देखता हूँ कि तम्=उसे माता=माता रेढि =चूम रही है सः उ=और वह मातरम्=माता को रेढि=चाट रहा है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।